विष्णु सक्सेना

जीवन का महत्व

ई-मेल-vishnusaxena26@gmail.com

—सतीश अब बहुत हो गया। तुम सब मर्यादाओं को तोड़ते जा रहे हो!

—हम तो बने ही मर्यादाएँ तोड़ने के लिए हैं ।

—लेकिन हर कार्य की एक सीमा होती है।

—जब हमारे माता पिता ने हमारे विवाह की स्वीकृति नहीं दी, तो हमने एक प्रगतिवादी दृष्टिकोण अपनाते हुए " लिव इन रिलेशनशिप" में रहने का निर्णय लिया। क्या तब मर्यादाएँ नहीं टूटी थी?

—तब हमने तोड़ी थी, अपना प्यार बनाए रखने के लिए व एक नए समाज के निर्माण के लिए!

—इस मर्यादा को तोड़ने से भी तो एक नए समाज का निर्माण होगा! क्या राजा अकबर ने राजा मान सिंह की बेटी जोधाबाई से शादी कर इतिहास नहीं रचा था ?

—रचा था, पर वहाँ पारदर्शिता थी । कोई धोका नहीं था । पर तुमने धोका दिया है । मोहम्मद के नाम पर सतीश का लेवल चिपकाया ।

—यदि मैं सतीश नहीं बनता, तो क्या तुम मुझे प्यार करती?

—कभी नहीं।

— इसीलिए मैं सतीश बना, क्योंकि मैं तुमसे प्यार करता था और तुम्हें पाना चाहता था।

—यदि तुम मुझसे प्यार करते हो तो फिर से सतीश बन कर हिंदू धर्म स्वीकार कर लो।

—यह कैसे हो सकता है?

—जैसे पहले किया था ।

—धर्म तो औरतें ही बदलती हैं!

—तो यहाँ भी मर्यादा तोड़ो!

—यह नहीं हो सकता, धर्म तो तुम्हें ही बदलना होगा!

—अब तुम्हारा प्रगतिवाद कहाँ गया?

—धर्म और प्रगतिवाद अलग अलग बात हैं!

—तो मेरा यह निर्णय है कि में किसी धोखेबाज के साथ रहना नहीं चाहती ।

—पर निर्णय लेने से पहले यह सोच लो कि अब तुम्हारे साथ शादी कौन करेगा?

—शादी! अरे शादी से ज्यादा महत्वपूर्ण तो यह जीवन है । यह भी जान लो, कि ना तो मैं श्रद्धा बनना चाहती हूँ, ना ही तुम्हें आफताब बनने का मौका दूंगी !

—पर तुम्हें जाने कौन देगा?

—मैं अभी जा रही हूँ।

इससे पहले मोहम्मद उठकर उसे रोक पाता, वह बिजली की तेजी से बाहर निकल गई। ____

मुस्कुराहट

विष्णु सक्सेना

—सुना है बेटा कि तुमने सरिता की पसंद के रिश्ते को ना कर दी है।

—जी पिताजी, क्योंकि वह दूसरी बिरादरी से है!

—एक बात बताओ।

—क्या पिताजी?

—क्या लड़के की सैलरी तुम्हारे अनुमान से काफी कम है?

—नहीं, उसकी सैलरी हमारी उम्मीदों से ज्यादा है।

—क्या उसके परिवार का स्टेटस तुम्हारे परिवार से कम है?

—नहीं, वह परिवार हमारे परिवार से ज्यादा समृद्ध हैं।

—क्या दोनों बच्चों की आयु में अंतर ज्यादा है?

—नहीं, वह भी ठीक है।

—मतलब यह हुआ कि लड़का यदि तुम्हारी बिरादरी का होता तो तुम हाँ कर देते।

—जी, पिताजी ।

—तुम्हें याद होगा सरिता जब पाँच साल की थी, तो उसके मचलने पर रात 11 बजे तुमने 'रात्रि बाजार' में जाकर उसे पीज़ा खिलवाया था ।

—जी, पिताजी।

—उसके थोड़ी बड़ी होने पर, उसके चेहरे पर छाई उदासी दूर करने के लिए तुमने उसे साइकिल और अभी कॉलेज में प्रवेश के समय स्कूटी भी दिलवाई थी।

—जी पिताजी, उसके चेहरे पर मुस्कराहट देखने के लिए मैं कुछ भी कर सकता हूँ!

—तो फिर अब देर क्यों कर रहे हो?

आइना

बूढ़ा बरगद पड़ोसी तालाब को उदास देखकर अनमाना हो उठा था। उससे रहा नहीं गया, तो एक दिन उसने तालाब से पूछा—

—बेटा, देख रहा हूँ कि कई दिनों से तुम्हारे चेहरे पर उदासी छाई है ।

—हाँ बाबा, सही कह रहे हो आप ।

—तुम्हारी उदासी का कारण?

—इसका कारण वह लड़का है, जो आपकी छाया में बैठकर अपलक मुझे निहारा करता था। मुझसे अपने दुख-सुख साँझे किया करता था।

—उसने तो कई दिन पहले, तुम्हारे ही जल में समाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर ली थी ।

—हाँ बाबा, बहुत दुखी था वह। वह बेचारा अपने दुखों से तो मुक्ति पा गया।

—तो फिर उदास क्यों होते हो?

—इसलिए कि मैं उसकी आँखों में अपना सौंदर्य निहारा करता था। मेरा आईना था वो!